

पाठ - 01

नमक का दरोगा

पाठ के साथ:

1. कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?
2. 'नमक का दरोगा' कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन से दो पहलू (पक्ष) उभरकर आते हैं?
3. कहानी के लगभग सभी पात्र समाज की किसी-न-किसी सच्चाई को उज्जागर करते हैं। निम्नलिखित पात्रों के संदर्भ में पाठ से उस अंश को उद्धृत करते हुए बताइए कि यह समाज की किस सच्चाई को उजागर करते हैं -
(क) वृद्ध मुंशी (ख) वकील (ग) शहर की भीड़
4. निम्न पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए -
नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ ।
(क) यह किसकी उक्ति है?
(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?
(ग) क्या आप एक पिता के इस वक्तव्य से सहमत हैं?
5. 'नमक का दरोगा' कहानी के कोई दो अन्य शीर्षक बताते हुए उसके आधार को भी स्पष्ट कीजिए।
6. कहानी के अंत में अलोपीदीन के वंशीधर को मैनेजर नियुक्त करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए। आप इस कहानी का अंत किस प्रकार करते?

पाठ के आस पास:

1. दरोगा वंशीधर गैरकानूनी कार्यों की वजह से पंडित अलोपीदीन को गिरफ्तार करता है, लेकिन कहानी के अंत में इसी पंडित अलोपीदीन की सहृदयता पर मुग्ध होकर उसके यहाँ मैनेजर की

नौकरी को तैयार हो जाता है। आपके विचार से वंशीधर का ऐसा करना उचित था? आप उसकी जगह होते तो क्या करते?

2. नमक विभाग के दारोगा पद के लिए बड़ों-बड़ों का जी ललचाता था। वर्तमान समाज में ऐसा कौन-सा पद होगा जिसे पाने के लिए लोग लालायित रहते होंगे और क्यों?
3. 'पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। वृद्ध मुंशी जी द्वारा यह बात एक विशिष्ट संदर्भ में कही गई थी। अपने निजी अनुभवों के आधार पर बताइए -
(क) जब आपको पढ़ना-लिखना व्यर्थ लगा हो।
(ख) जब आपको पढ़ना-लिखना सार्थक लगा हो।
(ग) 'पढ़ना-लिखना' को किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया होगा: साक्षरता अथवा शिक्षा? (क्या आप इन दोनों को समान मानते हैं?)
4. लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। वाक्य समाज में लड़कियों की स्थिति की किस वास्तविकता को प्रकट करता है?
5. इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कै से आए। ऐसा मुख्य जिसके पास असाध्य करनेवाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। अपने आस-पास अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को देखकर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? उपर्युक्त टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए लिखें।

समझाइए तो ज़रा -

1. नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए।
2. इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथप्रदर्शक और आत्मावलंबन ही अपना सहायक था।
3. तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया।
4. न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं।
5. दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी।

6. खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।
7. धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।
8. न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।

भाषा की बात:

1. भाषा की चित्रात्मकता, लोकोक्तियों और मुहावरों के जानदार उपयोग तथा हिंदी-उर्दू के साझा रूप एवं बोलचाल की भाषा के लिहाज से यह कहानी अद्भुत है। कहानी में से ऐसे उदाहरण छाँटकर लिखिए और यह भी बताइए कि इन के प्रयोग से किस तरह कहानी का कथ्य अधिक असरदार बना है?
2. कहानी में मासिक वेतन के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है? इसके लिए आप अपनी ओर से दो-दो विशेषण और बताइए। साथ ही विशेषणों के आधार को तर्क सहित पुष्ट कीजिए।
3. (क) बाबूजी आशीर्वाद!
(ख) सरकारी हुकम!
(ग) दातागंज के !
(घ) कानपुर!
दी गई विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ एक निश्चित संदर्भ में निश्चित अर्थ देती हैं। संदर्भ बदलते ही अर्थ भी परिवर्तित हो जाता है। अब आप किसी अन्य संदर्भ में इन भाषिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हुए समझाइए।

पाठ - 01

नमक का दरोगा

पाठ के साथ

उत्तर1: कहानी का नायक मुंशी वंशीधर हमें सर्वाधिक प्रभावित करता है। मुंशी वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यपरायण व्यक्ति है, जो समाज में ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की मिसाल कायम करता है। उसने अलोपीदीन दातागंज जैसे सबसे अमीर और विख्यात व्यक्ति को गिरफ्तार करने का साहस दिखाया। आखिरकर पंडित आलोपीदीन भी उसकी दृढ़ता से मुग्ध हो जाते हैं।

उत्तर2: पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के निम्नलिखित दो पहलू उभरकर आते हैं -

एक - पैसे कमाने के लिए नियमविरुद्ध कार्य करनेवाला भ्रष्ट व्यक्ति। लोगों पर जुल्म करता था परंतु समाज में वह सफ़े दपोश व्यक्ति था। यह उसके दोगले चरित्र को उभार करता है। दो - कहानी के अंत में उसका उज्ज्वल चरित्र सामने आता है। ईमानदारी एवं धर्मनिष्ठा के गुणों की कद्र करनेवाला व्यक्ति।

उत्तर3:

(क) वृद्ध मुंशी - वृद्ध मुंशी समाज में धन को महत्ता देनेवाले भ्रष्ट व्यक्ति है। वे अपने बेटे को ऊपरी आय बनाने की सलाह देते हैं। वे कहते हैं - 'मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।'

(ख) वकील - आजकल जैसे धन लूटना ही वकीलों का धर्म बन गया है। वकील धन के लिए गलत व्यक्ति के पक्ष में लड़ते हैं। मजिस्ट्रेट के अलोपीदीन के हक में फै सलाह देने पर वकील खुशी से उछल पड़ता है।

(ग) शहर की भीड़ - शहर की भीड़ दूसरों के दुखों में तमाशे जैसा मज़ा लेती है। पाठ में एक स्थान पर कहा गया है - 'भीड़ के मारे छत और दीवार में भेद न रह गया।'

उत्तर4:

(क) यह उक्ति बूढ़े मुंशीजी की है।

(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद कहा गया है क्योंकि वह महीने में एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। वेतन भी एक ही दिन आता है जैसे-जैसे माह आगे बढ़ता है वैसे वह खर्च होता जाता है।

(ग) जी नहीं, मैं एक पिता के इस वक्तव्य से सहमत नहीं हूँ किसी भी व्यक्ति को भ्रष्टाचार से दूर रहना चाहिए। एक पिता अपने बेटे को रिश्वत लेने की सलाह नहीं दे सकता और न देनी चाहिए।

उत्तर5: ईमानदारी का फल - ईमानदारी का फल हमेशा सुखद होता है। मुंशी वंशीधर को भी कठिनाइयों सहने के बाद अंत में ईमानदारी का सुखद फल मिलता है।

भ्रष्टाचार और न्याय व्यवस्था - इस कहानी में दिखाया गया है कि न्याय के रक्षक वकील के से अपने ईमान को बेचकर गलत आलोपीदीन का साथ देते हैं।

उत्तर6: कहानी के अंत में अलोपीदीन के वंशीधर को मैनेजर नियुक्त करने के पीछे निम्न कारण हो सकते हैं -

- उसकी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से अलोपीदीन प्रभावित हो गए थे।
- वे आत्मग्लानि का अनुभव कर रहे थे।

पाठ के आस पास:

उत्तर1: वंशीधर का ऐसा करना उचित नहीं था। मैं अलोपीदीन के प्रति कृ जता दिखाते हुए उन्हें नौकरी के लिए मना कर देता क्योंकि लोगों पर जुल्म करके कमाई हुई बेईमानी की कमाई की रखवाली करना मेरे आदर्शों के विरुद्ध है।

उत्तर2: वर्तमान समाज में ऐसे पद हैं - आयकर, बिक्रीकर, सेल्सटेक्स इंस्पेक्टर, आदि। इन्हें पाने के लिए लोग लालाहित रहते होंगे क्योंकि इसमें ऊपरी कमाई (रिश्वत) मिलने की संभावना ज्यादा होती है।

उत्तर3:

(क) जब मैंने देखा पढ़े-लिखें लोग गंदगी फै ला रहे हैं, मैंने पढ़ना-लिखना व्यर्थ लगा।

(ख) जब हम पढ़े-लिखें लोगों को उनके बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की योजना बनाते देखते हैं तो हमें उनका पढ़ना-लिखना सार्थक लगता है।

(ग) 'पढ़ना-लिखना' को शिक्षा के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। नहीं, इनमें अंतर है।

उत्तर4: यह कथन समाज में लड़कियों की उपेक्षित स्थिति को दर्शाता है। लड़कियों को बोझ माना जाता है। उनकी उचित देख-भाल नहीं की जा सकती।

उत्तर5: अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों देखकर मेरे मन में यह प्रतिक्रिया होती है कि समाज में सारे व्यक्ति वंशीधर जैसे चरित्रवान और साहसी क्यों नहीं होते। जो अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को उनके कुकर्मों की सज़ा दिलाएँ।

समझाइए तो ज़रा -

उत्तर1: इसमें नौकरी के ओहदे और उससे जुड़े सन्मान से भी ज्यादा महत्त्व ऊपरी कमाई को दिया गया है। ऐसी नौकरी करने के लिए कहा जा रहा है जहा ज्यादा से ज्यादा रिश्वत मिल सके ।

- उत्तर2:** मुंशी वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यपरायण व्यक्ति है, जो समाज में ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की मिसाल कायम करता है। इस बुराइयों से भरे हुए युग से अपने आप को दूर रखने के लिए वंशीधर धैर्य को अपना मित्र, बुद्धि को अपनी पथप्रदर्शक और आत्मावलंबन को ही अपना सहायक मानते हैं।
- उत्तर3:** वंशीधर को रात को सोते-सोते अचानक पुल पर से जाती हुई गाड़ियों की गडगडाहट सुनाई दी। उन्हें भ्रम हुआ कि सोचा कुछ तो गलत हुआ रहा है। उन्होंने तर्क से सोचा कि देर रात अंधेरे में कौन गाड़ियाँ ले जाएगा और इस तर्क से उनका भ्रम पुष्ट हो गया।
- उत्तर4:** आजकल न्यायालय में भी भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। जैसे धन लूटना ही वकीलों का धर्म बन गया है। वकील धन के लिए गलत व्यक्ति के पक्ष में लड़ते हैं। तभी आलोपीदीन जैसे लोग न्याय और नीति को अपने वश में रखते हैं।
- उत्तर5:** पंडित आलोपीदीन रात में गिरफ्तार हुए ही थे कि खबर सब जगह फैल गई। बुद्धि की जबान टीका-टिप्पणी करने से दिन हो या रात रुकती नहीं।
- उत्तर6:** वृद्ध मुंशी जी अपने बेटे वंशीधर की सत्यनिष्ठा से नाराज हैं। वे सोचते हैं रिश्वत न लेकर और आलोपीदीन को पकड़कर वंशीधर ने गलती की और उपर्युक्त कथन कहते हैं।
- उत्तर7:** वंशीधर ने आलोपीदीन के द्वारा दिए जानेवाले धन को ठुंराकर उसके धन के मिथ्याभिमान को चूर-चूर कर डाला। धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।
- उत्तर8:** न्यायालय में वंशीधर और आलोपीदीन का मुकदमा चला। वंशीधर धर्म के लिए और आलोपीदीन धन के सहारे अधर्म के लिए लड़ रहा था। इस प्रकार न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।

भाषा की बात:

उत्तर1: भाषा की चित्रात्मकता -

'जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त थे...एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी, उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बंद किए मीठी नींद से सो रहे थे।'

लोकोक्तियाँ -

- पूर्णमासी का चाँद।
- सुअवसर ने मोती दे दिया।

मुहावरे -

- फूले न समाना।
- सन्नाटा छाना।

- पंजे में आना।
- हाथ मलना।
- ढुँ में कालिख लगाना आदि।

इनके प्रयोग से कहानी का प्रभाव बढ़ा है।

उत्तर2: कहानी में मासिक वेतन के लिए निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग किया गया है -

- पूर्णमासी का चाँद
- पीर का मजार

हमारे विशेषण -

- एक दिन की खुशी (क्योंकि उस दिन बहुत खुश होते हैं)
- चार दिन की चाँदनी (कुछ दिन तक वेतन आने पर सारी चीज़ें ले ली जाती है। चार दिन में सब खर्च हो जाता है)

उत्तर3:

- (क) बाबूजी आशीर्वाद - बाबूजी आशीर्वाद दीजिए।
- (ख) सरकारी हुकम - वे सरकारी हुकम का पालन करते हैं।
- (ग) दातागंज के - पंडित जी दातागंज के रहने वाले हैं।
- (घ) कानपुर - यह बस कानपुर जाती है।